



Nahr Ki Sadanen (Gujarati)

# નહર કી સદાએ

- રોઝાદાર કાફુ 7
- બન્દૂક કી એક જોડી..... 13
- ઈવાદત કે 31 મ-દની ફૂલ 18

સૈબે તરીકત, સમીરે સહલે સુલત, જાનિયે દા'વતે હસ્લામી, હસ્ત અલ્લામા મૌલાના અબૂ ઝિયાલ

મુહમ્મદ ઇબ્રાહિમ અતાર કાદિરી ર-મવી



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

# नहर की सदाओं<sup>1</sup>

शैतान लाभ सुस्ती दिलाये येह बयान (23 सइहात) मुकम्मल पठ  
 लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में म-दनी छिन्किलाब बरपा  
 डोता महसूस इरमाओंगे.

## मोतियों का ताज

अल कौलुल बदीअ में है : छिन्तिकाल के बा'द उजरते सय्यिहुना  
 अबुल अब्बास अहमद बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفُور को अहले शीराज  
 में से किसी ने ज्वाब में देभा के वोह सर पर मोतियों का ताज सजाये  
 जन्नती लिबास में मलबूस शीराज की जामेअ मस्जिद की मेहराब में  
 भरे हैं, ज्वाब देबने वाले ने अर्ज की : مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ ؟ अल्लाह  
 اَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मैं आप के साथ क्या मुआ-मला इरमाया ? इरमाया :  
 कसरत से दुरुद शरीफ़ पढा करता था येही अमल काम आ गया के  
 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मज्फिरत इरमा दी और मुझे ताज पहना कर  
 दाभिले जन्नत इरमाया. (الْقَوْلُ الْبَیْعِ ص २०६)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

1 : येह बयान अभीरे अहले सुन्नत सुन्त الْعَالِيَةِ دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ الْعَالِيَةِ का शारज ता मदीनतुल औलिया  
 मुलतान (17 जुमादल उफ़्रा 1418 सि.हि./20-9-1997) को ब उरीअओ टेलीफ़ोन रिदे  
 हुवा था. तरमीम व छिन्किले के साथ तहरीरन छाजिरे बिदमत है.

मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

ફરમાને મુસ્તકા : عَنِ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुर्रदे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रलमतें बेजता है. (स्)

भीठे भीठे ઈસ્લામી ભાઈયો ! હઝરતે સચ્ચિદુના કા'બુલ અહ્બાર  
 وَحَمْدُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ એક અઝીમ તાબેઈ બુઝુર્ગ છે, ઈસ્લામ આ-વરી સે કબ્લ  
 આપ યહૂદિયોં કે બહુત બડે આલિમ છે. આપ وَحَمْدُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ફરમાતે હૈં  
 કે બની ઈસ્રાઈલ કા એક શખ્સ (તૌબા કરને કે બા'દ ફિર) એક ફાહિશા કે  
 સાથ કાલા મુંહ કર કે જબ ગુસ્લ કે લિયે એક નહર મેં દાખિલ હુવા તો  
 નહર કી સદાએં આને લગીં : “તુઝે શર્મ નહીં આતી ? ક્યા તૂને તૌબા  
 કર કે યેહ અહ્દ નહીં ક્રિયા થા કે અબ કભી ઐસા નહીં કરુંગા.” યેહ  
 સુન કર ઉસ પર રિક્કત તારી હો ગઈ ઔર વોહ રોતા ચીખતા યેહ  
 કહતા હુવા ભાગા : “અબ કભી ભી અપને પ્યારે પ્યારે اَللّٰهُمَّ اَللّٰهُمَّ  
 કી ના ફરમાની નહીં કરુંગા.” વોહ રોતા હુવા એક પહાડ પર પહોંચા  
 જહાં બારહ અફરાદ અલ્લાહ اَللّٰهُمَّ اَللّٰهُمَّ કી ઈબાદત મેં મશ્ગૂલ છે. યેહ ભી  
 ઉન મેં શામિલ હો ગયા. કુછ અર્સે કે બા'દ વહાં કહ્ત પડા તો નેક  
 બન્દોં કા વોહ કાફિલા ગિઝા કી તલાશ મેં શહર કી તરફ ચલ દિયા.  
 ઈત્તિફાક સે ઉન કા ગુઝર ઉસી નહર કી તરફ હુવા. વોહ શખ્સ ખૌફ સે  
 થર્રા ઉઠા ઔર કહને લગા : મેં ઈસ નહર કી તરફ નહીં જાઊંગા ક્યુંકે  
 વહાં મેરે ગુનાહોં કા જાનને વાલા મૌજૂદ હૈ, મુઝે ઉસ સે શર્મ આતી હૈ.  
 યેહ રુક ગયા ઔર બારહ અફરાદ નહર પર પહોંચે. તો નહર કી સદાએં  
 આની શુરૂઅ હો ગઈ : ઐ નેક બન્દો ! તુમ્હારા રફીક કહાં હૈ ? ઉન્હોં ને  
 જવાબ દિયા : વોહ કહતા હૈ : ઈસ નહર પર મેરે ગુનાહોં કા જાનને  
 વાલા મૌજૂદ હૈ ઔર મુઝે ઉસ સે શર્મ આતી હૈ. નહર સે આવાઝ  
 આઈ : “سُبْحٰنَ اللّٰهِ ! अगर तुम्हारा कोई अजीब तुम्हें ઈઝા દે બૈઠે  
 મગર ફિર નાદિમ હો કર તુમ સે મુઆફી માંગ લે ઔર અપની ગલત  
 આદત તર્ક કર દે તો ક્યા તુમ્હારી ઉસ સે સુલ્હ નહીં હો જાતી ? તુમ્હારે

करमाने मुस्तकी : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (طبرانی) भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया।

रङ्गीक ने भी तौबा कर ली है और नेकियों में मशगूल हो गया है लिहाजा अब उस की अपने रब عَزَّ وَجَلَّ से सुल्ह हो चुकी है. उसे यहां ले आओ और तुम सब यहीं नहर के کنارे एबादत करो.” उन्होंने ने अपने रङ्गीक को ખુશ ખબરી दी और फिर येह सब मिल कर वहां मशगूले एबादत हो गये उत्ता की उस शप्स का वही एन्तिकाल हो गया. एस पर नहर की सदाओं गूंज उठीं : “अै नेक बन्दो ! एसे मेरे पानी से नहलाओ और मेरे ही کنارे दफ्नाओ ताके बरोजे क्रियामत भी वोह यहीं से उठाया जाये.” युनान्चे उन्होंने ने अैसा ही क्रिया. रात को उस के मजार के करीब अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की एबादत करते करते सो गये. सुभ उन सब का वहां से कूय करने का एरादा था. जब जागे तो क्या देખते हैं के उस के मजार के अतराफ में 12 सर्व (या'नी अेक दरप्त जो सीधा और मफ्ती (या'नी गाजर की) शकल का होता है) के ખूब सूरत कदआवर दरप्त ખडे हैं. येह लोग समज गये के अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने येह उमारे लिये ही पैदा करमाये हैं, ताके उम कहीं और जाने के बजाये एन के साये में ही पडे रहें. युनान्चे वोह लोग वही एबादत में मशगूल हो गये. जब उन में से किसी का एन्तिकाल होता तो उसी शप्स के पहलू में दफ्न क्रिया जाता. उत्ता के सब वफात पा गये. बनी एस्राएल उन के मजारात की जियारत के लिये आया करते थे. رَحْمَتُهُمُ اللهُ تَعَالَى أَجْمَعِينَ (کتاب التَّوَابِينَ ص ۹۰) अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके उमारी बे हिसाब मफिरत हो.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



ફરમાને મુસ્તકા: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा।  
 (उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (रुतबे)

## क्या सिर्फ़ नेक लोग ही जन्नत में जायेंगे ?

रहमत की बात आर्ध है तो येह अर्ज करता यलूँ के बा'ज लोग जैसे ली लोते हैं जो नादानि में कल देते हैं: “जन्नत में सिर्फ़ नेकियों के जरीअे ही दाखिला मिलेगा और जो गुनाह करेगा वोह लाजिमी तौर पर जहन्नम में जायेगा, रहमत से बप्शे जाने की बात हमारी समज में नही आती.” यकीनन येह शैतान के वस्वसे हैं. वरना मैं अपनी तरफ़ से रब عَزَّوَجَلَّ की रहमत की बात कहां कर रहा हूँ, सुनो.....! सुनो.....! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पारह 24 सू-रतुज्जुमर आयत 53 में एशाद फ़रमाता है :

قُلْ لِيَعْبُدِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ  
 أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِن رَّحْمَةِ  
 اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا  
 إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٥٧﴾

तर-ज-मअे कन्जुल एमान : तुम फ़रमाओ  
 अै मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने (ना फ़रमानियों  
 के जरीअे) अपनी जानों पर ज़ियादती की  
 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत से ना उम्मीद  
 न लो. बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब गुनाह  
 बप्श देता है बेशक वोही बप्शने वाला  
 मेहरबान है.

उदीसे कुदसी है, फ़ुदाअे रहमान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने रहमत  
 निशान है : يَا نَبِيَّ رَحْمَتِي غَضِي. मेरी रहमत मेरे गजब पर सभकत  
 रभती है.

(मुसलम स 1471 अहदिथ 2701)

एमाम अहमद रज़ा ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के भाईजान उस्ताजे  
 जमन, शहन्शाहे सुभन हजरते मौलाना हसन रज़ा खान  
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने ना'तिया दीवान “जौके ना'त” के अन्दर बारगाहे  
 फ़ुदाअे रहमान عَزَّوَجَلَّ में अर्ज करते हैं :

इरमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَيْرُ إِلَهٍ وَرَبِّهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ठिक हुवा और उस ने मुज पर दुरद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (महारज़)

سَبَقَتْ رَحْمَتِي عَلَى غَضَبِي      तूने जभ से सुना दिया या रभ  
 आसरा हम गुनाहगारों का      और मजबूत हो गया या रभ

(जौके ना'त)

## आजिज बन्दे की हिकायत

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! यकीनन अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रहमत बहुत बहुत बहुत ही बड़ी है. वोह ब जाहिर किसी छोटी सी अदा पर राज़ी हो जाये तो औसा नवाज़ता है के बन्दा सोय भी नहीं सकता. युनान्ये “किताबुतत्वाबीन” में है, हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह्लुबार युनान्ये : رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं : बनी इस्राईल के दो<sup>2</sup> आदमी मस्जिद की तरफ़ यले, अक तो मस्जिद में दाखिल हो गया मगर दूसरे पर षौफ़े खुदा عَزَّ وَجَلَّ तारी हो गया और वोह बाहर ही बैठ गया और कलने लगा : “में गुनाहगार इस काबिल कहां जो अपना गन्दा वुजूह ले कर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के पाक घर में दाखिल हो सकूं.” अल्लाह عَزَّ وَजَلَّ को उस की येह आजिजी पसन्द आ गई और उस का नाम सिद्दीकीन में दर्ज इरमा दिया. (كِتَابُ التَّوَابِينَ ص 83) याद रहे ! “सिद्दीक” का द-रज “वली” और “शहीद” से भी बडा होता है.

## नादिम बन्दे की हिकायत

इसी तरह की अक हिकायत किताबुतत्वाबीन सफ़हा 83 पर लिखी है : अक इस्राईली से गुनाह सरजद हो गया, वोह बेहद नादिम हुवा और बे करार हो कर इधर से उधर भागने लगा के किसी तरह उस का गुनाह मुआफ़ हो जाये और परवर्द गार عَزَّ وَجَلَّ राज़ी हो जाये. अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की बारगाहे रहमत में उस की बे करारी भरी

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा मैं डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा. (क़ुरआन)

नदामत को श-रके कबूलियत हासिल हुई और अल्लाह ﷻ ने उस को विलायत के आ'ला तरीन रुत्बे सिद्दीकियत से नवाज दिया.

## शरमिन्दगी तौबा है

सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने पुरा गवार है : (الْمُسْتَدْرَك ج ٥ ص ٣٤٦ حديث ٧٦٨٧) या'नी शरमिन्दगी तौबा है. उकीकत येह है के आ'ज अवकात गुनाहों पर नदामत वोह काम कर जाती है जो बडी से बडी एबादत भी नहीं कर सकती, इस का मतलब हरगिज येह भी नहीं के एबादत न की जाये, येह सब अल्लाह ﷻ की मशियत पर है, कभी नदामत काम कर जाती है तो कभी एबादत. युनान्ये

## रोजादार डाकू

रौजुर्याहीन में है, उजरते सय्यिदुना शैफ शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِي फ़रमाते हैं : मैं ओक काफ़िले के हमराह मुल्के शाम जा रहा था, रास्ते में डाकूओं की जमाअत ने हमें लूट लिया और सारा माल व अस्बाब अपने सरदार के सामने ढेर कर दिया, सामान में से ओक शकर और बादाम की थेली निकली, सारे डाकूओं ने निकाल कर खाना शुरुअ कर दिया मगर उन के सरदार ने उस में से कुछ न खाया, मैं ने पूछा : सब खा रहे हैं मगर आप क्यूं नहीं खा रहे ? उस ने कहा : मैं रोजे से हूँ. मैं ने हैरत से कहा : तुम लूटमार भी करते हो और रोज़ा भी रખते हो ! सरदार बोला : अल्लाह ﷻ से सुल्ह के लिये भी तो कोई राह बाकी रખनी याहिये. उजरते सय्यिदुना शैफ शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِي फ़रमाते हैं : कुछ अर्से आ'द मैं ने उसी डाकूओं के सरदार को ओहराम की

करमाने मुस्तफ़ा. عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَلِيظٌ وَعَلِيمٌ. मुज़ पर दुर्रुद पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तदारत है. (रिज़्क)

हालत में तवाफ़े भानओ का'बा में मशगूल देखा, उस के येहरे पर  
 र्थबादत का नूर था और मुज़-हदात ने उसे कमज़ोर कर दिया था, मैं ने  
 तअज्जुब के साथ पूछा : क्या तुम वोही शप्स नहीं हो ? वोह बोला :  
 “ओ हां मैं वोही हूं और सुनिये ! उसी रोज़े ने अद्लाह جَلَّ وَجَلَّ के साथ  
 मेरी सुल्ह करवा दी है.” (رَوْضُ الرِّيَاحِينَ ص ۲۹۳)

## हर पीर शरीफ़ को रोज़ा रभिये

मीठे मीठे र्थस्वामी भाँयो ! मा'लूम हुवा के किसी नेकी को छोटी  
 समज़ कर तर्क नहीं कर देना याहिये, क्या पता वोही छोटी नज़र आने  
 वाली नेकी अद्लाह جَلَّ وَجَلَّ की बारगाह में मकबूल हो जाओ और हमारे  
 दोनों जहां संवर जाओं. र्थस खिकायत से नफ़ली रोज़े की अहम्मियत  
 भी मा'लूम हुई. बेशक हर ओक कसरत के साथ नफ़ली रोज़े रभने की  
 ताकत नहीं पाता, ताहम कम अज़ कम हर पीर शरीफ़ का रोज़ा तो रभ  
 डी लेना याहिये के सुन्नत है नीज़ नेक बनाने के अज़ीम नुस्खे म-दनी  
 र्थन्आमात में से 58वां म-दनी र्थन्आम भी. عَزَّ وَجَلَّ दा'वते  
 र्थस्वामी से वाबस्ता कसीर र्थस्वामी भाँ और र्थस्वामी बहनें र्थस  
 “म-दनी र्थन्आम” के मुताबिक पीर शरीफ़ का रोज़ा रभने की सुन्नत  
 अदा करते हैं और आशिकाने रसूल के हर हिल अज़ीज़ 100 र्थी सदी  
 र्थस्वामी येनल म-दनी येनल पर हर पीर शरीफ़ को बराहे रास्त (या'नी  
 LIVE) “मुनाजते र्थफ़तार” का सिख़िसिवा होता और आशिकाने रसूल  
 के र्थफ़तार करने का इह परवर मन्ज़र दिभाया जाता है. आप भी ब  
 निख्यते सवाब “म-दनी येनल” देभते रहिये और दूसरों को भी देभने  
 की दा'वत दे कर ખૂબ सवाब का अज़ीम ખજાના લૂટिये.

करमाने मुस्तकاً : صلى الله تعالى عليّ و آله وسلّم : तुम जहां भी हो मुज पर दुइद पढो के तुम्हारा दुइद मुज तक पहुँचता है. (परान)

## आतश परस्त घराने का कबूले ईस्लाम

आईये ! लगे छाथों “म-दनी येनल” की अेक म-दनी बहार सुनते हैं : बम्बई (हिन्द) के जहांगीर नामी अेक भूबड़ नौ जवान इल्मी अदाकार के बयान का लुब्बे लुबाब है : हमारा सारा घर आग की पूजा किया करता था, जैसे में म-दनी येनल हमारे लिये गोया पैगामे नजात बन कर आया ! किस्सा यूँ है के मेरी अम्मी बडे शौक से म-दनी येनल देखा करती थी, अेक बार में ने सोया के आबिर अम्मीजान ईतनी दिलयस्पी के साथ “सब्ज ईमामे वाले मौलानाओं” की बातों को क्यूँ सुना करती है, लाओ में भी तो देखूँ के येह “मौलाना लोग” क्या बोलते हैं ! युनान्ये में ने भी T.V. पर “म-दनी येनल” लगाया : म-दनी मुजा-करे का सिखिला था, मुजे बहुत अस्था लगा, में गौर से सुनता रहा, म-दनी मुजा-करे की बातें तासीर का तीर बन कर मेरे जिगर में पैवस्त होती रहीं, मेरे दिल की दुन्या जेरो जबर होने लगी और मेरा जमीर पुकार पुकार कर कलने लगा : जहांगीर ! तू गलत राह पर भटक रहा है, अगर नजात याहता है तो सब्ज ईमामे वालों का सख्या दीन या’नी मज़हबे ईस्लाम कबूल कर ले, مُحَمَّدٌ ﷺ में ने दा’वते ईस्लामी की वेब साईट [www.dawateislami.net](http://www.dawateislami.net) पर राबिता किया और मुसल्मान हो गया. में ने दा’वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-भतुल मदीना से भी राबिता किया, उन्हीं ने मेरी भूब रहनुमाई इरमाई, उन के हुस्ने अप्लाक ने मुजे बेहद मु-तअस्सिर किया और अद्लाह ﷻ की रहमत से अब हमारा सारा घर ईस्लाम के दामन में आ चुका है. में रात के तीन तीन बजे तक म-दनी येनल पर

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جِس نے مُوڑ પર દસ મરતબા દુરૂદ પાક પઢો અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ઉસ પર સો રહમતેં નાઝિલ ફરમાતા હે. (طبرانی)

આને વાલા “મ-દની મુઝા-કરા” દેખતા રહા હું, ઉસ મેં એક બાર દાઢી રખને કી તરગીબ સુન કર મેં ને દાઢી ભી બઢાની શુરૂઅ કર દી હૈ ઓર બમ્બઈ કે દા’વતે ઈસ્લામી વાલે આશિકાને રસૂલ કી સોહબત મેં રહ કર ઈસ્લામી ન-ઝરિયાત વ નમાઝ વગૈરા ઈબાદાત કી ભી તા’લીમ હાસિલ કર રહા હું.

મ-દની ચેનલ લાએગા સુન્નત કી ઘર ઘર મેં બહાર

કર દે મોલા દો જહાં મેં નાઝિરી કા બેડા પાર

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! બાત બહુત દૂર નિકલ ગઈ, ઉસ રોઝે કી બ-ર-કત ઓર અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ કી રહમત કા તઝકિરા હો રહા થા, سُبْحَانَ اللهِ ! ડાકૂઓં કે સરદાર કો રોઝે ને કહાં સે કહાં પહોંચા દિયા ! રોઝે કી બ-ર-કત સે ઉસે હિદાયત ભી મિલી ઓર ઈબાદતો રિયાઝત કી સઆદત ભી મિલી.

## બખ્શિશ કા બહાના

કીમિયાએ સઆદત મેં હઝરતે શૈખ કિતાની فِدَس سِرُّهُ التُّورَانِي ફરમાતે હેં : મેં ને હઝરતે સચ્ચિદુના જુનેદ બગદાદી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي કો બા’દે વફાત ખ્વાબ મેં દેખ કર પૂછા : مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ ? અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ને આપ કે સાથ કયા મુઆ-મલા ફરમાયા ? ફરમાને લગે : મેરી ઈબાદતેં ઓર રિયાઝતેં તો કામ ન આઈ, અલબત્તા રાત કો ઉઠ કર જો દો રક્ઝત તહજજુદ પઢ લિયા કરતા થા ઉસી કે સબબ મગ્ફિરત હો ગઈ.

(کیمیائے سعادت ج ۲ ص ۱۰۰۷)

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس کے پاس میرا ٹیکہ ہو اور وہ صبح و شام پر دُڑد شریک نہ پڑے تو وہ لوگوں میں سے کجھूस तरीन شائس ہے۔ (زینت)

رَحْمَتِ حَقِّ "بِهَا" نَهْ مِي حَقِيْدِ  
رَحْمَتِ حَقِّ "بِهَانَهْ" مِي حَقِيْدِ

(યા'ની અલ્લાહ ﷻ કી રહમત "બહા" યા'ની કીમત નહીં માંગતી બલ્કે ઉસ કી રહમત તો "બહાના" ઢૂંડતી હૈ)

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! ફરાઈઝ કી અદાએગી કે સાથ સાથ નવાફિલ કી ભી આદત ડાલની ઓર ખુસૂસન તહજજુદ તો હરગિઝ નહીં છોડની ચાહિયે, કયા મા'લૂમ તહજજુદ મેં ઉઠને કી મશક્કત બારગાહે ઇલાહી ﷻ મેં કબૂલિયત પા જાએ ઓર હમારી મફિરત કા બહાના બન જાએ.

### બા'ઝ મુસલ્માન ઝરૂર જહન્નમ મેં જાએંગે

બબરદાર ! ઈસ રહમત ભરે બયાન કા મતલબ કહીં કોઈ યેહ ન સમજે કે ચૂંકે અલ્લાહ ﷻ કી રહમત બહુત બડી હૈ લિહાઝા અબ નમાઝેં છોડ દો..... ર-મઝાન કે રોઝે ભી મત રખો..... T.V. ઓર ઇન્ટરનેટ કે રૂ બરૂ બૈઠો ઓર ખૂબ ફિલ્મેં ડિરામે દેખો..... ખૂબ બદ નિગાહી કરો..... અલ્લાહ ﷻ કી રહમત બહુત બડી હૈ અબ માં બાપ કો સતાના શુરૂઅ કર દો..... ખૂબ ગાલિયાં બકો..... કસરત સે ઝૂટ બોલો..... મુસલ્માનોં કી ખૂબ ગીબતેં કરો..... મુસલ્માનોં કે દિલ દુખાઓ..... બદ અપ્લાકી કે સાબિકા સારે રેકોર્ડ તોડ દો અલ્લાહ ﷻ કી રહમત બહુત બડી હૈ. દાઢી મુંડવા દો યા ખશખશી દાઢી રખો..... ચોરી કરો..... ડાકા ડાલો..... ઝુલ્મો સિતમ કી આંધિયાં ચલા દો..... ખૂબ શરાબ પિયો..... જૂઆ ખેલો બલ્કે જૂઆ ઓર મુનશિયાત કા અઝા હી ખોલ ડાલો ! જો જો ગુનાહ અભી તક નહીં કર પાએ ﷻ વોહ ભી કર ડાલો કયૂંકે અલ્લાહ ﷻ કી

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा ठिंक हो और वोह मुज पर दुइटे पाक न पढे. (एम)

રહમત બહુત બડી છે. મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો! અલ્લાહ ﷻ આપ પર અપના ખૂબ ફઝલો કરમ ફરમાએ ઓર આપ કો બે હિસાબ બખ્શે, આમીન. ઈસ તરહ શૈતાન કાન પકડ કર આપ કો અપની ઈતાઅત મેં ન લગા દે. યાદ રખિયે ! જહાં અલ્લાહ ﷻ રહીમ વ કરીમ હૈ વહાં જબ્બાર વ કહ્હાર ભી હૈ, જહાં વોહ નુક્તા નવાઝ હૈ વહાં બે નિયાઝ ભી હૈ. અગર ઉસ ને કિસી છોટે સે ગુનાહ પર ગિરિફત ફરમા લી તો કહીં કે ન રહેંગે. ખબરદાર ! ખબરદાર ! ખબરદાર ! યેહ તૈ હે કે કુછ ન કુછ મુસલ્માન અપને ગુનાહોં કે સબબ દાખિલે જહન્નમ ભી હોંગે. હમેં અલ્લાહ ﷻ કી ખુફયા તદબીર સે હર વક્ત લરઝાં વ તરસાં રહના યાહિયે કહીં ઐસા ન હો કે ઉન જહન્નમ મેં જાને વાલોં કી ફેહરિસ મેં હમારા નામ ભી શામિલ હો.

### ફારૂકે આ'ઝમ કી મ-દની સોચ

ઈમામુલ આદિલીન, અમીરુલ મુઅમિનીન હઝરતે સય્યિદુના ઉમર ફારૂકે આ'ઝમ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કી મ-દની સોચ પર કુરબાન જાઈયે કે ઉમ્મીદ હો તો ઐસી ઓર ખૌફ ભી હો તો ઐસા ! યુનાન્ચે આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ફરમાતે હેં : અગર અલ્લાહ ﷻ સબ બન્દોં મેં સે સિર્ફ એક કો દાખિલે જહન્નમ ફરમાને વાલા હો તો મેં ખૌફ કરૂંગા કે કહીં ઐસા ન હો કે જહન્નમ મેં દાખિલ હોને વાલા વોહ એક બન્દા મેં હી હૂં ઓર અગર અલ્લાહ ﷻ સિવાએ એક કે સબ કો જહન્નમ મેં દાખિલ ફરમાને વાલા હો તો મેં ઉમ્મીદ કરૂંગા કે જહન્નમ સે મહફૂઝ રહને વાલા વોહ એક બન્દા મેં હી હૂં. (حلية الأولياء ج ١ ص ١٨٩) બહર હાલ અલ્લાહ ﷻ કી રહમત સે માયૂસ ભી નહીં હોના યાહિયે ઓર ઉસ કે કહરો ગઝબ સે બે ખૌફ ભી નહીં રહના યાહિયે.

करमाने मुस्तफ़ी حَسْبِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَى وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अहमद)

## बन्दूक की अेक गोली.....

मैं आप को अपनी बात अक्ली दलील से समझाने की कोशिश करता हूं, म-सलन इस वक्त इस एजतिमाअ में दस हजार इस्लामी भाई भौजूद हों और कोई दहशत गर्द करीबी मकान की छत पर पिस्तौल ले कर ज़ाओ और अे'लान करे मैं सिर्फ़ अेक गोली यलाता हूं अगर लगेगी तो सिर्फ़ अेक ही को लगेगी बाकियों को कुछ नहीं कडूंगा. क्या जयाल है ? सिर्फ़ अेक ही को तो गोली लगनी है ! क्या बाकिया नव हजार नव सो निनानवे इस्लामी भाई बे भौफ़ हो जाअेंगे ? हरगिज नहीं बल्के हर अेक इस भौफ़ से भाग ज़ाओगा के कहीं किसी अेक को लगने वाली "वोह गोली" मुजे ही न आ लगे ! उम्मीद है मेरी बात समज में आ गई होगी.

## आग की जूतियां

जब येह तै शुदा अम्र है के कुछ न कुछ मुसल्मान गुनाहों के सबब जहन्नम में दाखिल किये जाअेंगे तो आखिर हर मुसल्मान इस बात से क्यूं नहीं डरता के कहीं मुजे भी जहन्नम में न डाल दिया जाअे. पुदा عَزَّ وَجَلَّ की कसम ! बन्दूक की गोली की तकलीफ़ जहन्नम के अजाब के सामने कुछ भी नहीं. मुस्लिम शरीफ़ में है : "जहन्नम का सब से डलका अजाब येह है के मुअज़्ज़ब (या'नी अजाब पाने वाले) को आग की जूतियां पहनाई जाअेंगी जिस की गरमी और तपिश से उस का दिमाग पतीली की तरह भौलता होगा, वोह येह समजेगा के सब से ज़ियादा अजाब मुजी पर है." ( حَدِيث ٢١٢ ) مُسْلِم व ص ١٣٤ ) बुभारी शरीफ़ में है के अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ बरोजे क्रियामत सब से कम अजाब वाले दोज़भी से इरमाअेगा : "जो कुछ (माल व दौलत वगैरा) जमीन में है अगर वोह तेरी भिडक होता तो क्या तू अजाब से छुटकारा पाने के लिये येह फ़िदये में दे देता ?" तो वोह कहेगा : "ज़रूर." ( حَدِيث ٢٦١ ) ص ٤٦ ) بُخَارِي ) या'नी सभ्नी कुछ दे डालूंगा के कहीं येह

करमाने मुस्तफ़। حَسْبِيَ اللهُ تَعَالَى عَلِيمٌ وَهُوَ اللهُ وَسَلَّمَ : मुज़ पर दुःख शरीक़ पढो अल्लाह. عَلٌّ وَرَجُلٌ تُوْمَ پَر رَحْمَتِ بِيَجِيَا. (ابن مَرْوَى)

आग की जूतियां मेरे पाँउ से निकलती हों ! अस किसी तरह भी इस अज़ाब से मुझे छूटकारा मिल जाये.

**क्या सब से उलका अज़ाब बरदाशत हो जायेगा ?**

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! सोचो ! बार बार सोचो ! अगर किसी छोटे से गुनाह के सबब येही सब से छोटा और उलका अज़ाब किसी पर मुसल्लत कर दिया गया तो उस का क्या बनेगा ? म-सलन किसी को गावी दी डालां के येह कबीरा गुनाह है फिर भी अगर इस ज़ुर्म की पादाश में सब से उलका अज़ाब ही हो गया तो क्या होगा ? मां बाप को सताने के ज़ुर्म में, के येह भी कबीरा गुनाह है मगर इस ज़ुर्म पर भी अगर सब से उलका अज़ाब ही हो जाये तो इस की बरदाशत किस में है ? इसी तरह रोज़ मर्दा किये जाने वाले गुनाहों पर गौर करते यले जाईये. जूट बोलने के सबब, किसी की गीबत करने के सबब, युगुल ખોरी के सबब, हराम रोजी कमाने के सबब, नशा करने के सबब, झिंमैं और डिरामे देपने के सबब, गाने बाजे सुनने के सबब, बल्के T.V. पर सिर्फ़ औरत से खबरें सुनने के सबब अगर सब से उलका अज़ाब हो गया तो क्या होगा ? वोह औरत भी कितनी बढ नसीब है जो यन्ट सिक्कों की ખातिर T.V. पर आ कर खबरें सुनाती है. काश ! उस को येह अहसास हो जाता के मेरे जरीअे लाખों मर्द बढ निगाही का गुनाह कर के, अपनी आंखों को हराम से पुर कर के अपनी आंखों में जहन्नम की आग बरने का सामान कर रहे हैं और इस सबब से मैं खुद भी बहुत जियादा गुनहगार हुई जा रही हूं ! बहर डाल जो इस तरह अपने दिल को बहलाता है के मैं ने तो सिर्फ़ खबरों के लिये T.V. रखा है, वोह डान खोल कर सुन ले के मर्द का अजन्बिय्या औरत को देपना या औरत का अजन्बी मर्द को ब शह्वत देपना हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, तो अगर T.V. पर सिर्फ़ खबरें देपने, सुनने के

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وسلم : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मङ्कुरत है. (म. १०)

सबभ ही जहन्नम का हलका अजाब मुसल्लत कर दिया गया और आग की जूतियां पहना दी गईं तो क्या बनेगा ? अपने अन्दर ईस्लाह का जजबा बेदार करने के लिये अपना जेहून बनाईये के अगर बिगैर शर-ई उज़ूर के मैं ने नमाज की जमाअत तर्क कर दी और सब से हलका अजाब दे दिया गया तो मेरा क्या होगा ! अगर बे पर्दगी कर ली, अपनी भाभी से बे तकल्लुफ़ी की या उस को कस्दन देखा, ईसी तरह यथी, ताई, मुमानी, साली, भालाजाह, मामूजाह, फूफ़ीजाह, ययाजाह या तायाजाह से पर्दा न किया उन के सामने बिला तकल्लुफ़ आते जाते रहे, उन को देखते रहे, उन से हंस हंस कर बातें करते रहे और इन जराईम में से किसी अक गुनाह की हद तक पड़ोयने वाले जुर्म की पादाश में अगर पाउ में आग की जूतियां डाल दी गईं तो क्या बनेगा ? ज़ हां ! भाभी, यथी, ताई, मुमानी, वगैरा वगैरा जिन का तजकिरा हुवा येह सब अजनबिय्या और गैर महरमा औरतें हैं इन से और हर उस औरत से शरीअत ने पर्दे का हुक्म दिया है जिन से शादी हो सकती है. ईसी तरह औरत भी तमाम गैर महारिम रिश्तेदारों से पर्दा करे.

### जहन्नम के भौइनाक अजाब की जल्दिकयां

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! अपने आप को कम अज कम छोटे और हलके अजाब से ही उरा दीजिये हालां के जहन्नम में अक से अक भौइनाक अजाब हैं. युनान्ये दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ किताब "बयानाते अत्तारिय्या" जिल्द 2 सफ़हा 293 ता 297 पर है : वोह बन्दा भी कितना अजब है जो येह जानता है के दोज़भ सप्त तरीन अजाब का मकाम है फिर भी गुनाहों का ईरतिकाब करता है. भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! अगर जहन्नम को सूई के नाके के बराबर भोल दिया जाये तो तमाम जमीन वाले उस की गरमी से हलाक हो जायें. अहले जहन्नम को जो मशरूब पीने के

करमाने मुस्तफ़ा. صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जो मुज़ पर अक दुइइ शरीफ़ पढता है अल्लाह उंस के लिये अक कीरात अज्र लिखता है और कीरात उहुइ पडाउ जितना है. (मुराज़)

लिये दिया जायेगा वोह इस कदर अतरनाक है के अगर उस का अक डोल दुन्या में भडा दिया जाये तो दुन्या की तमाम भेतियां बरबाद हो जायें न अनाज उगे न इल. जहन्नम के सांप और बिच्छू भेद भौंफनाक हैं. उदीस शरीफ़ में है : “जहन्नम में अ-जमी उीतों की गरदन की मिसल बडे बडे सांप होंगे जो दोज़भियों को उसते होंगे वोह जैसे जहरीले होंगे के अगर अक मर्तबा काट लेंगे तो यालीस साल तक उन के जहर की तकलीफ़ नहीं जायेगी और लगाम लगाये हुअे अख्यरों के बराबर बडे बडे बिच्छू जहन्नमियों को उंक मारते रहेंगे के अक बार उंक मारने की तकलीफ़ यालीस साल तक बाकी रहेगी.”

(17729 حديث 216 ص 6 مسند امام احمد ج 1) तिरमिज़ी की रिवायत में है : “जहन्नम में “सुइद” नामी आग का अक पडाउ है जिस की बुलन्दी सत्तर बरस की राह है. काफ़िर जहन्नमियों को उस पर बढाया जायेगा. सत्तर बरस में वोह उस की बुलन्दी पर पड़ोयेंगे फिर उीपर से उन्हे गिराया जायेगा तो सत्तर बरस में वोह नीचे पड़ोयेंगे इसी तरह उन को अजाब दिया जाता रहेगा.” (ترمذى ج 4 ص 260 حديث 2080) जहन्नम के ऐसे ऐसे भौंफनाक अजाब का तज़किरा सुनने के बा वुजूह भी जो गुनाहों से बाज़ न आये उस पर वाकैत अजुब है. आपिर ईन्सान को इस दुन्या ने क्या दे देना है जो इस की रंगीनियों में गुम और इस की लूटमार में मसड़फ़ है.

### जहन्नम की अतरनाक गिजायें

लजीज़ गिजायें मजे ले ले कर आने वालों को जहन्नम की भयानक गिजाओं को नहीं भूलना चाहिये ! तिरमिज़ी की रिवायत में है : दोज़भियों पर भूक मुसल्लत की जायेगी तो येह भूक उन सारे अजाबों के बराबर हो जायेगी जिन में वोह मुत्तला हैं वोह इरियाद करेंगे तो उन्हे जरीअ (जहरीली कांटेदार घास) में से दिया जायेगा, जो न मोटा करे न भूक से नजात दे. फिर वोह आना मांगेंगे तो उन्हे

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिस्कार करते रहेंगे. (उं. ५)

इन्दा लगने वाला पाना दिया जायेगा तो उन्हें याद आयेगा के वोह दुन्या में इन्दा (लगे निवाले) को पानी से निगलते थे युनान्हे वोह पानी मांगेंगे तो उन को लोहे के जम्बूर (सन्सी) से षौलता हुवा पानी दिया जायेगा जब वोह उन के मुंह के करीब होगा तो उन के मुंह लून देगा फिर जब उन के पेट में दाखिल होगा तो उन के पेटों की हर चीज काट डालेगा. (२०१० हदीथ २६३ व ६४) अक और हदीसे पाक में है : “अकूम (या'नी थुहड जो के दोजबियों को पिलाया जायेगा) का अक कतरा अगर दुन्या पर टपक पड़े तो दुन्या वालों के पाने पीने की तमाम चीजों को (तल्प व बढबूदार बना कर) भराव कर दे.” (अबिं साजे हदीथ ३२० व ०३) आह ! जहन्नम में ऐसा डोलनाक अजाव डोने के बा वुजूह आपिर ईन्सान गुनाहों पर इतना दिल्दर क्यूं है ?

### न मायूस हों न बे षौइ

भीठे भीठे ईस्लामी ल्माईयो ! षौइके षुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से लरज उठिये ! और अपने गुनाहों से तौबा कर लीजिये ! हमें अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत से मायूस ली नही होना चाहिये और उस के कहरो गजब से बे षौइ ली नही रहना चाहिये, दोनों ही सूरतों में तबाही है, जो कोई रहमते षुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से मायूस हो गया वोह ली हलाक हुवा और जो गुनाहों पर दिल्दर हो गया और पकड में आ गया तो वोह ली भरबाह हुवा. बहर डाल गैरत व मुरव्वत का तकाजा ली येही है के जिस परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने महुज अपने इजलो करम से हमें बे शुमार ने'मतें अता इरमाई हैं उस की इताअत व इरमां भरदारी की जाये और उस के मडबूब, दानाअे गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दामने करम से हर दम वाबस्ता रहते हुअे उन की सुन्नतों को अपनाया जाये के इसी में हमारे लिये दुन्या व आपिरत की ल्माई है.

कब गुनाहों से कनारा में कर्इगा या रब ! नेक कब अै मेरे अद्लाह ! बनूंगा या रब !

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर एक बार दुर्रुह पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रहमतें भेजता है. (स्म)

कब गुनाहों के मरज से मैं शिफ़ा पाऊँगा ! कब मैं भीमार मदीने का बनूँगा या रब !

अइव कर और सदा के लिये राजी हो जा

गर करम कर दे तो जन्नत में रहूँगा या रब !

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! बयान को ईप्तिताम की तरफ़ लाते हुअे सुन्नत की इज़ीलत और यन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूँ. ताजदारे रिसालत, शह-शाहे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्मे बजमे खिदायत, नोशअे बजमे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मडब्बत की उस ने मुज से मडब्बत की और जिस ने मुज से मडब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगी. (ابن عساکر ج ۹ ص ۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आका

जन्नत में पडोसी मुजे तुम अपना बनाना

سَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلٰى مُحَمَّد

“घयादत करना रसले मोहतरम की सुन्नते मुबा-रका है”  
के ईकतीस दुर्रुह की निस्बत से घयादत के 31 म-दनी इल

عُودُوا الْمَرِيضَ ﴿1﴾ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ 8 इराभीने मुस्तफ़ा या'नी मरीज की घयादत करो (الادب المفرد ص ۱۳۷ حدیث ۵۱۸) ﴿2﴾ जो शप्स किसी मरीज की घयादत के लिये जाता है तो अल्लाह उंस पर पछतर हजार (75,000) इरिशतों का साया करता है और उस के हर कदम उठाने पर उस के लिये अक नेकी लिखता है और हर कदम रबने पर उस का अक गुनाह मिटाता है और अक द-रजा बुलन्द इरमाता है यहां तक के वोह अपनी जगह पर बैठ जाअे, जब वोह बैठ जाता है तो रहमत उसे ढांप लेती है और अपने घर वापस आने तक रहमत उसे ढांपे रहेगी (مُعْجَمُ اَوْسَطِ ج ۳ ص ۲۲۲ حدیث ۴۳۹۶) ﴿3﴾ जो शप्स किसी मरीज की घयादत को जाता है तो आस्मान से अक मुनादी

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (جران)

निदा करता है : तुझे बिशारत (या'नी भुश भबरी) डो तेरा यलना अय्था है और तूने जन्नत की एक मन्जिल को अपना ठिकाना बना लिया (ابن ماجه २८ ص १२ احديث १६६३)

﴿4﴾ जो मुसल्मान किसी मुसल्मान की र्थयादत के लिये सुब्ह को जाये तो शाम तक उस के लिये सत्तर हज़ार फिरिशते र्थस्तिग्फ़ार (या'नी बग्गिशश की हुआ) करते हैं और शाम को जाये तो सुब्ह तक सत्तर हज़ार फिरिशते र्थस्तिग्फ़ार करते हैं और उस के लिये जन्नत में एक भाग होगी (ترمذی २९० ص २ احديث १९१)

﴿5﴾ जिस ने अय्थे तरीके से जुजू किया फिर अपने मुसल्मान भाई की सवाब की निय्यत से र्थयादत की तो उसे जल्मम से 70 साल के इंसिले तक दूर कर दिया जायेगा (ابوداؤد २६८ ص ३ احديث ३०९७)

﴿6﴾ जब तू मरीज के पास जाये तो उस से कल के तेरे लिये हुआ करे के उस की हुआ फिरिशतों की हुआ की मानिन्द है (ابن ماجه २८ ص ११ احديث १६६१)

﴿7﴾ मरीज जब तक तन्दुरुस्त न हो जाये उस की कोई हुआ रद नहीं होती (احديث १११)

﴿8﴾ जब कोई मुसल्मान किसी मुसल्मान की र्थयादत को जाये तो 7 बार येह हुआ पढे : (1) اَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ اَنْ يَشْفِيَكَ۔ (ابوداؤد ३ ص २०१ احديث ३१०६)

✽ मरीज की र्थयादत करना सुन्नत है अगर मा'लूम है के र्थयादत के लिये जाने से उस बीमार पर गिरां (या'नी ना गवार) गुजरेगा, औसी हालत में र्थयादत के लिये मत जाये (बहारे शरीअत, जि. 3, स. 505)

✽ अगर मरीज से आप के दिल में रन्जिश या तबीअत को उस से मुना-सबत नहीं फिर भी र्थयादत कीजिये ✽ र्थत्तिबाअे सुन्नत की निय्यत से र्थयादत कीजिये अगर मद्दज र्थस लिये बीमार पुर्सा की के जब मैं बीमार पडूं तो वोह भी मेरी तीमार दारी के लिये आये तो सवाब नहीं मिलेगा ✽ किसी की र्थयादत के लिये जायें और मरज की सप्ती देयें तो उस को उराने वाली बातें न करें म-सलन तुम्हारी हालत

1. तरजमा : मैं अ-जमत वाले, अर्शे अजीम के मालिक अल्वाह صَلَّوْا عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से तेरे लिये शिफ़ा का सुवाल करता हूँ.

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दे पाक न पड़ा तबकीक वोह बंद भप्त हो गया. (उर्ज)

पराब है और न ही इस अन्दाज पर सर खिलाओं जिस से डालत का पराब होना समझा जाता है ❀ ईयादत के मौकअ पर मरीज या दुष्पी शप्स के सामने अपने येहरे पर रन्जो गम की कैफ़ियत नुमायां कीजिये ❀ बातयीत का अन्दाज हरगिज ऐसा न हो के मरीज या उस के अजीज को वस्वसा आये के येह डमारी परेशानी पर भुश हो रहा है ! ❀ मरीज के घर वालों से भी ईजहारें डमदई कीजिये और जो भिदमत या तआवुन कर सकते हों कीजिये ❀ मरीज के पास जा कर उस की तबीअत पूछिये और उस के लिये सिद्धत व आक़ियत की दुआ कीजिये ❀ नबिय्ये रडमत, शफ़ीअे उम्मत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ की आदते करीमा येह थी के जब किसी मरीज की ईयादत को तशरीफ़ ले जाते तो येह इरमाते: (بخاري ج ۲ ص ۵۰۰ حدیث ۳۱۱۶) (۱) لَا بَأْسَ طَهُورًا إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى (۱) ❀ मरीज से अपने लिये दुआ करवाँये के मरीज की दुआ रद नहीं होती ❀ इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : मरीज की पूरी ईयादत येह है के उस की पेशानी पर हाथ रभ कर पूछे के मिजाज कैसा है ? (ترمذی ج ۴ ص ۳۳۴ حدیث ۲۷۴) मुफ़रिसरे शहीर डकीमुल उम्मत डजरते मुफ़ती अडमद यार भान رَحْمَةُ الْحَنَّانِ ईस डदीसे पाक के तहत इरमाते हैं : या'नी जब कोई शप्स किसी भीमार की मिजाज पुर्सी करने जावे तो अपना हाथ उस की पेशानी पर रभे फिर जभान से येह (या'नी आप की तबीअत कैसी है) कहे, ईस से भीमार को तसल्ली होती है, मगर बहुत देर तक हाथ न रभे रहे, येह हाथ रभना ईजहारें महब्बत के लिये है (भिरआत, जि. 6, स. 358 भि तसरुफ़िन) ❀ मरीज के सामने ऐसी बातें करनी याडिओं जो उस के दिल को भली मा'लूम हों, भीमारी के इजाँल और अद्लाड عَزَّ وَجَلَّ की रडमत के तजक़िरे कीजिये ताके उस का जेहन सवाबे आभिरत की तरफ़ माँल हो और वोह शिकवा व शिकायत <sup>مدین</sup> 1. तरजमा : कोई डरज की बात नहीं अद्लाड तआला ने याडा तो येह मरज (शुनाहों से) पाक करने वाला है.

करमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَيْرُ الْوَسْمِ : जिस ने मुझ पर एक बार दुर्रदे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रडमतें बेजता है. (1)

के अल्लाज़ ज़बान पर न लाये ❀ ध्यादत करते हुअे मौकअ की मुना-सबत से मरीज़ को नेकी की दा'वत भी पेश कीजिये, ખુસूसन नमाज़ की पाबन्दी का जेहून दीजिये के बीमारियों में कई नमाज़ी भी नमाज़ों से गाफ़िल हो जाते हैं ❀ मरीज़ को म-दनी येनल देખने की रगबत दिलाईये और उस की ब-र-कतों से आगाह कीजिये ❀ मरीज़ को म-दनी काफ़िलों में सफ़र की और ખુद सफ़र के काबिल न हो तो अपनी तरफ़ से घर के किसी इर्द को सफ़र करवाने की तरगीब फ़रमाईये. और म-दनी काफ़िलों की वोह म-दनी બહારें सुनाईये जिन में दुआओं की ब-र-कतों से मरीज़ को शिक्षाएं मिली हैं ❀ मरीज़ के पास ज़ियादा देर तक न बैठिये और न शोरो गुल कीजिये हां अगर बीमार ખુद ही देर तक बिठाये रखने का ખ्वाहिश मन्द हो तो मुम्किना सूरत में आप उस के ज़ज्बात का अहतिराम कीजिये ❀ बा'ज़ लोगों की आदत होती है के मरीज़ या उस के नुमायन्दे से मिलते हैं तो कुछ न कुछ धलाज बताते हैं और बा'ज़ तो मरीज़ से धसरार करते हैं के मैं ज़े धलाज बता रहा हूं वोह कर लो, ફુલાं दवा ले लो, ठीक हो जाओगे ! मरीज़ को याहिये के “जिस तिस” (या'नी हर किसी) का बताया हुवा धलाज न करे, के “नीम हकीम ખतरअे જાન”, किसी का बताया हुवा धलाज करने से पहले अपने तबीब से मशवरा कर ले। ખબરદાર ! ज़े तबीब न होने के बा वुजूद धलाज बताते रहते हैं वोह धस से बाज़ रहें ❀ मरीज़ की ध्यादत के मौकअ पर तोहफ़े लाना उम्दा काम है मगर न लाने की सूरत में ध्यादत ही न करना और दिल् में येह ખयाल करना के अगर कुछ न ले कर ज़अेगा तो वोह क्या सोयेंगे के ખाली હાથ ઈયાદત के लिये आ गअे. ખाली હાથ ભી ઈયાદત કર હી લેની યાહિયે ન કરના સવાબ સે મહરૂમી का બाधस है ❀ आप ध्यादत के लिये जाते हुअे अगर ફल और બિસ્કિટ વગैરા તહાઈફ લે જાને લગેં તો મશવરા હૈ કે

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો શપ્સ મુઝ પર દુરૂદ પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્મત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (جران)

મક-ત-બતુલ મદીના કે મત્બૂઆ કુછ મ-દની રસાઈલ ભી લે જા કર મરીઝ કો પેશ કીજિયે તાકે વોહ મુલાકાતિયોં, (और अगर अस्पताल में हो तो) पड़ोसी मरीजों और उन के अजीजों को तोड़फूटन दे सकें बल्के जड़े नसीब ! मरीज ખુદ ભી કુછ મ-દની રસાઈલ હદિથ્યતન મંગવા કર ઈસ ગરઝ સે અપને પાસ રખ કર સવાબ કમાએ ❁ ફાસિક કી ઈયાદત ભી જાઈઝ હૈ, ક્યૂંકે ઈયાદત હુકૂકે ઈસ્લામ સે હૈ ઓર ફાસિક ભી મુસ્લિમ હૈ (બહારે શરીઅત, જિ. ૩, સ. 505) ❁ મુરતદ ઓર કાફિરે હરબી કી ઈયાદત જાઈઝ નહીં (ફી ઝમાના દુન્યા મેં સારે કાફિર હરબી હેં) ❁ બદ મઝહબ (ગૈરે મુરતદ) કી ઈયાદત કરના મન્ઝ હૈ.

હઝારોં સુન્નતેં સીખને કે લિયે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ દો કુતુબ (1) 312 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ “બહારે શરીઅત” હિસ્સા 16 ઓર (2) 120 સફહાત કી કિતાબ “સુન્નતેં ઓર આદાબ” હદિથ્યતન હાસિલ કીજિયે ઓર પઢિયે. સુન્નતોં કી તરબિય્યત કા એક બેહતરીન ઝરીઆ દા’વતે ઈસ્લામી કે મ-દની કાફિલોં મેં આશિકાને રસૂલ કે સાથ સુન્નતોં ભરા સફર ભી હૈ.

લૂટને રહમતેં કાફિલે મેં ચલો સીખને સુન્નતેં કાફિલે મેં ચલો  
હોંગી હલ મુશ્કિલેં કાફિલે મેં ચલો ખત્મ હોં શામતેં કાફિલે મેં ચલો

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ચેહ રિસાલા પઢ કર દૂસરે કો દે દીજિયે

શાદી ગમી કી તકરીબાત, ઈજતિમાઆત, આ’રાસ ઓર જુલૂસે મીલાદ વગૈરા મેં મક-ત-બતુલ મદીના કે શાએઅ કદર્દા રસાઈલ ઓર મ-દની ફૂલોં પર મુશ્તમિલ પેમ્ફલેટ તકસીમ કર કે સવાબ કમાઈયે, ગાહકોં કો બ નિયતે સવાબ તોહફે મેં દેને કે લિયે અપની દુકાનોં પર ભી રસાઈલ રખને કા મા’મૂલ બનાઈયે, અખ્બાર ફરોશોં યા બચ્ચોં કે ઝરીએ અપને મહલ્લે કે ઘર ઘર મેં માહાના કમ અઝ કમ એક અદદ સુન્નતોં ભરા રિસાલા યા મ-દની ફૂલોં કા પેમ્ફલેટ પહોંચા કર નેકી કી દા’વત કી ધૂમેં મચાઈયે ઓર ખૂબ સવાબ કમાઈયે.

તાલિબે ગમે મદીના વ  
બકીઅ વ મફિરત વ  
બે હિસાબ જન્નતુલ  
ફિરદોસ મેં આકા  
કા પડોસ



14 શવાલુલ મુકર્રમ 1433 હિ.

2-9-2012

کرم مانے مستحق! حَسْبِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَيْهِ وَسَلَّمَ: جس کے پاس میرا کچھ ہوا پھر اُس نے مجھ پر دُرُودِ پاک نہ پڑھا تو اُس کی کوئی بے حد بے حد بے حد ہو گیا۔ (پہلے)

### کہنرلس

عنوان	سکڈ	عنوان	سکڈ
موتیوں کا تاج	1	بہشیش کا بھانا	10
اھلاہل عَزَّ وَجَلَّ دے رہا ہے	4	با'ج مسلمان اکر جھنم مے آئے	11
بار بار توبہ کرتے رہیے !	4	کڑکے آ'ج م کی م-دنی سوب	12
کیا سیکے نک لوگ ہی جنم مے آئے؟	5	بندھک کی آک گوئی.....	13
آجکل بندھ کی لیکایم	6	آگ کی جوتیاں	13
نارم بندھ کی لیکایم	6	کیا سب سے لک ا آجکل بربدشت ہے آئے؟	14
شرمندگی توبہ ہے	7	جھنم کے پوکناک آجکل کی لکیاں	16
رؤآءار ڈاک	7	جھنم کی اترناک گجائے	17
ہر پیر شریک کو رؤآ رہیے	8	ن مایوس آں ن بے پوک	18
آاتش پرست ہرانے کا کبھے اھلام	9	اھادت کے 31 م-دنی کھل	19

### آآءومراج

مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ	کتاب
ءارالکتاب العلمیہ بیروت	حلیۃ الاولیاء	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	قرآن پاک
ءارالکتاب العلمیہ بیروت	الترغیب والترہیب	ءارالکتاب العلمیہ بیروت	بخاری
ءارالفکر بیروت	ابن عساکر	ءارابن حزم بیروت	مسلم
انتشارات گنجینہ تہران	کیماے سعادت	ءاراحیاء التراث العربی بیروت	ابوداؤد
مؤسسۃ الریان بیروت	القول البدیع	ءارالفکر بیروت	ترمذی
ءارالکتاب العلمیہ بیروت	کتاب التوائین	ءارالمعرف بیروت	ابن ماجہ
ءارالکتاب العلمیہ بیروت	روض الریاحین	طشکنت ازبکستان	الادب المفرد
ضیاء القرآن مرکز الاولیاء لاہور	مرآة	ءارالفکر بیروت	مسند امام احمد
رضافاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور	قادی رضویہ	ءارالکتاب العلمیہ بیروت	مجموعہ اوسط
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	ءارالمعرف بیروت	مسند رک

